IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बज्जिकांचल क्षेत्र में हिंदी विषय में उच्चारण शिक्षण-अधिगम की स्थिति का विश्लेषण

अनामिका रानी
शोधार्थी, शिक्षा संकाय
बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

सारांश

संपूर्ण विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता एवं करियर की सफलता में भाषा ज्ञान का बहुत महत्व होता है। भाषा पर अच्छी पकड़ किसी भी विषय को सरल एवं सुगम बना देता है। इसलिए भाषा शिक्षण पर शुरू से पर्याप्त ध्यान दिया जाना चाहिए। भाषा की गुणवत्ता में शुद्ध उच्चारण की भूमिका बहुत महत्व रखता है। विशेषकर हिंदी भाषा जिसे देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, मुख से उच्चरित ध्वनि के आधार पर ही वर्णमाला एवं इसकी मात्राओं का निर्माण हुआ है । इसलिए हिंदी भाषा की शुद्धता इसके शुद्ध उच्चारण पर निर्भर करती है जिसे सही शिक्षण एवं अभ्यास से हासिल किया जा सकता है।

प्रस्तावना

किसी भी भाषा का उपयोग सामान्यतः दो रूपों में किया जाता है— मौखिक और लिखित। इसमें उच्चारण का बहुत महत्व होता है। विशेष रूप से हिंदी जो कि देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, इसके वर्ण या अक्षर मूल ध्वनियों के उच्चारण के आधार पर निर्धारित किए गए हैं, इसलिए इसकी शुद्धता में उच्चारण का सर्वाधिक महत्व है। हम जब हम बज्जिका भाषा- भाषियों की बात करते हैं तो हिंदी शिक्षण में उच्चारण दोष की स्थिति का आकलन आवश्यक हो जाता है; क्योंकि इस क्षेत्र में औपचारिक शिक्षा की प्रथम भाषा के रूप में हिंदी का प्रचलन सामान्य है ।

शुद्ध उच्चारण का महत्व

किसी भी भाषा के उपयोग में उच्चारण का बहुत महत्व है। हिंदी भाषा की शुद्धता एवं गुणवत्ता का स्तर इस बात पर निर्भर करता है कि इसके शिक्षण अधिगम में उच्चारण की शुद्धता पर किस स्तर तक ध्यान दिया गया है। साथ ही हिंदी के उपयोग के दौरान होने वाली उच्चारण संबंधी अशुद्धियों को चिन्हित कर उसके निराकरण का उपाय किया जाए। हिंदी भाषा का ध्वनि तंत्र बहुत विकसित और वैज्ञानिक है। इसमें मुख से उच्चरित प्रत्येक ध्वनि के लिए निश्चित चिन्ह और मात्राएं निर्धारित हैं। इसलिए उनके उच्चारण में रोमन या लैटिन भाषा जैसी अनिश्चित स्थिति नहीं है। इसलिए अगर उन सभी ध्वनियों या वर्णों के लिए उच्चारण का स्थान और उसके व्यवहार का सही-सही ज्ञान हो जाए तो उसका अभ्यास करके भाषा की शुद्धता के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।रोमन लिपि या अंग्रेजी भाषा में एक ही ध्वनि के लिए कई अक्षर या अक्षर-समूह का प्रयोग किया जाता है, जबकि हिंदी में एक ध्वनि के लिए एक ही तरह का अक्षर या मात्राका प्रयोग होता है। हिंदी में स्वर वर्ण एवं व्यंजन वर्णों का स्पष्ट वर्ग है। इसके स्वरों के उच्चारण में किसी अन्य स्वर या वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती है, जबकि व्यंजन के उच्चारण में उसके साथ स्वर वर्ण की ध्वनि का सहारा लेना पड़ता है। उच्चारण में लगने वाले समय के आधार पर इसमें ह्रस्व स्वर एवं दीर्घ स्वर के दो वर्गों को स्पष्ट रूप से निर्धारित किया गया है । इसके अतिरिक्त ह्रस्व स्वर की तुलना में तीन गुना समय लगने वाले प्लुत स्वरऊं,हे३आदि का भी स्पष्ट निर्धारण है। व्यंजन में भी अल्पप्राण और महाप्राण वाले वर्णों का बलाघात स्पष्ट रूप से बताया गया है। हिंदी भाषा एवं देवनागरी लिपि की इसी वैज्ञानिकता को स्वीकार करते हुए सर

विलियम जॉन्स (Sir William Jones) ने कहा कि "देवनागरी किसी भी लिपि की तुलना में अधिक वैज्ञानिक और व्यवस्थित लिपि है।" अंग्रेजी के प्रसिद्ध लेखक श्री खुशवंत सिंह ने भारतीय भाषाओं के विकास के संदर्भ में सुझाया था कि "उर्दू लिखने के लिए देवनागरी लिपि को अपनाने से उर्दू उत्कर्ष को प्राप्त होगी।" इसी प्रकार मोहनलाल विद्यार्थी ने अपनी पुस्तक Indian Culture Through the Ages, p.61 में लिखा कि "The Devnagari alphabet is a splendid monument of phonological accuracy, in the sciences of language."

शोध का उद्देश्य

इस लघु शोध का निम्नलिखित उद्देश्य है:—

1. जिस क्षेत्र में बज्जिका भाषा का प्रयोग मातृभाषा के रूप में की जाती है, उनके भाषायी कौशल का आकलन।
2. उक्त क्षेत्र में भाषायी शुद्धता एवं गुणवत्ता की परख।
3. संबंधित क्षेत्र में उच्चारण शिक्षण अधिगम की स्थिति का आकलन।
4. संबंधित क्षेत्र में उच्चारण दोष की स्थिति का पता लगाना।
5. छात्रों के उच्चारण संबंधी दोषों का कारण ज्ञात करना।
6. उच्चारण दोष के निराकरण का उपाय ज्ञात करना।
7. उच्चारण संबंधी दोषों का नैदानिक परीक्षण एवं मूल्यांकन करना।

शोध की परिकल्पना

इस शोध की यह परिकल्पना है कि जिन बच्चों को आरंभ से ही हिंदी की शिक्षा दी जाती है, उनकी हिंदी भाषा शुद्ध और गुणवत्ता पूर्ण होनी चाहिए। यदि औपचारिक शिक्षणकी प्रथम भाषा में भी शुद्धता का अभाव है तो इसका कारण दोषपूर्ण शिक्षण और सही-सही अभ्यास का अभाव हो सकता है। हिंदी में मुख से उच्चरित ध्वनि के अनुसार ही वर्ण या अक्षर निर्धारित किए गए हैं । इसलिए यदि उनका उच्चारण सही किया जाएगा तो उसे लिखा भी शुद्ध रूप में जाएगा और यदि उनका उच्चारण ही अशुद्ध होगा तो मौखिक भाषा भी त्रुटिपूर्ण होगी और लिखने में भी अशुद्धियों की भरमार होगी।

न्यादर्श

उच्चारण की शुद्धता एवं उसके शिक्षण अभ्यास की गुणवत्ता की जांच हेतु मैं मुजफ्फरपुर एवं उसके आसपास के कुछ विद्यालयों का चुनाव की जहां के बच्चों की मातृभाषा बज्जिका है। शोधकार्य हेतु चयनित वैसे विद्यालय निम्नलिखित हैं:—

1. सरस्वती शिशु विद्यामंदिर, सदातपुर, मुजफ्फरपुर।
2. केंद्रीय विद्यालय, गन्नीपुर, मुजफ्फरपुर।
3. इंडियन पब्लिक स्कूल, छताचौक, मुजफ्फरपुर।
4. राधा बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सिकंदरपुर, मुजफ्फरपुर।
5. उत्क्रमित मध्य विद्यालय, बारमदपुर, मुजफ्फरपुर।
6. चैपमैन राजकीय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, हाथीचौक, मुजफ्फरपुर।
7. राजकीयकृत तिरहुत अकैडमी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, अघोरियाचौक, मुजफ्फरपुर।
8. राजकीय मध्य विद्यालय, आगानगर, पुरुषोत्तमपुर, मुज़फ्फरपुर।

प्रश्नावली

1. 'ख' और 'रव' को पढ़ने में क्या अंतर है ?
2. 'छ'और 'क्ष' के उच्चारण में क्या अंतर है ?
3. 'ढ' और 'ढ़' के उच्चारण में क्या अंतर है?
4. 'ड', 'ड़' और 'र' के उच्चारण में अंतर भेद करें।
5. 'ण'और 'न' के उच्चारण में अंतर करके बोलें।
6. 'ब' एवम् 'व' के उच्चारण में क्या अंतर होता है ?

7. 'श', 'ष' एवम् 'स' को कैसे पढ़ते हैं?
8. 'इ' और 'ई' के उच्चारण में अंतर कीजिए।
9. 'दिन' और 'दीन' को कैसे पढ़ेंगे?
10. 'पिता' और 'पीता' के उच्चारण भेद को बताओ।
11. 'उ' और 'ऊ' के उच्चारण में क्या अंतर है?
12. 'कुक' और 'कूक' को कैसे पढ़ेंगे ?
13. 'यमुना' और 'जमुना' क्या एक ही शब्द है?

शोध परिणाम

उक्त प्रश्नावली का छात्रों पर प्रयोग करने से ज्ञात होता है कि आरंभ से ही शुद्ध उच्चारण की शिक्षा नहीं दी जाती है। इसका परिणाम होता है कि ह्रस्व एवं दीर्घ के स्वर में भेद नहीं कर पाते हैं । इसके अतिरिक्त वे क्ष को भीछ की तरह ही पढ़ते हैं। 'य' को 'ज' तथा 'व' को 'ब'पढ़ लेते हैं। 'ड़' और 'ड'में तथा 'ण'और 'न'में अंतर नहीं कर पाते हैं।'ढ' और 'ढ़' दोनों का अंतर नहीं जानते हैं। उच्चारण में इस प्रकार की अशुद्धियों के कारण वे शब्दों को अशुद्ध तरीके से पढ़ते हैं और इसी कारण से उनके लिखने में भी अशुद्धियां होती हैं ।

शोध परिणाम का परीक्षण

शोध के उक्त परिणाम का परीक्षण एवं उसका विश्लेषण करने पर पता चलता है कि मिलते-जुलते उच्चारण वाले वर्णों एवं मात्राओं के उच्चारण का भेद यदि स्पष्ट रूप से विद्यार्थियों को बता दिया जाए और शुरू से ही उसको सही-सही पढ़ने का अभ्यास कर दिया जाए तो उच्चारण की समझ भी विकसित होगी और उनके पठन कौशल एवं लेखन कौशल का भी समुचित विकास होगा। आवश्यकता इस बात की है कि बाल्यावस्था से ही वर्णमाला के शिक्षण को आरंभ करके बच्चों को सही-सही उच्चारण से परिचय करना चाहिए। उन्हें ह्रस्व एवं दीर्घ के उच्चारण में सही-सही भेद का ज्ञान करना चाहिए।

सुझाव

उक्त शोध के परिणाम का विश्लेषण करने के उपरांत मैं यह सुझाव देना चाहती हूं कि वर्णमाला एवं मात्राओं का शिक्षण आरंभ करने के समय से ही बच्चों को सही-सही उच्चारण की शिक्षा दी जानी चाहिए। उच्चारण की दृष्टि से सामान लगने वाले दो वर्णों के उच्चारण में क्या अंतर है, यह स्पष्ट रूप से शिक्षक को बताना चाहिए और उसका समुचित अभ्यास सभी छात्र-छात्राओं से कराना चाहिए। अक्षर को लिखकर सिर्फ यह बता देना कि यह ह्रस्व इ है और यह दीर्घई है—यह बता देना पर्याप्त नहीं है; बल्कि उन्हें इसका उच्चारण करके बताना चाहिए कि इन दो वर्णों को बोलने में क्या अंतर है, इन्हें हम किस प्रकार से पढ़ते हैं। इसी प्रकार मात्राओं का भी या बारह खड़ी का भी अभ्यास उच्चारण के साथ कराया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

पूरे शोध का यह निष्कर्ष है कि भाषा में उच्चारण की शुद्धता का बहुत अधिक महत्व होता है। यदि प्रारंभ से ही बालक को शुद्ध उच्चारण की शिक्षा दी जाए तो उनके पढ़ने में शुद्धता आएगी। यदि बालक किसी मात्रा या शब्द को सही-सही पढ़ना सीख जाए तो उसे लिखने भी शुद्ध-शुद्ध लगता है और धीरे-धीरे उसके बोलने में भी शुद्धता आ सकती है।

संदर्भ सूची

[1] राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) — मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली पृष्ठ– 20

[2] चतुर्वेदी, स्नेहलता (2016-17)— पाठ्यक्रम में भाषा, आर्यन प्रिंटर्स, आगरा पृष्ठ– 47…

[3] डॉ.वचनदेवकुमार— वृहद व्याकरण भास्कर (नवीन परिशोधित संस्करण 1994, पुनःमुद्रण 2014), भारती भवन, पटना पृष्ठ– 4

[4] नालंदा खुला विश्वविद्यालय, गांधी मैदान, पटना (2019) पाठ्यचर्या में भाषा (B.Ed. 15वाँ पत्र) पृष्ठ–78

[5] डॉ.(श्रीमती) उमा मंगल (1991, 2009)— हिंदी शिक्षण, आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्लीपृष्ठ– 93-94